T-6

ਸੋਹੰ ਹਰਿ ਸੋਹੰ

श्री गुरु रविदास जी महाराज

सति भाखै रविदास

ट्रैक्ट न:6

पहली वार -2000 जनवरी 2000

अनुवादकर्ता : अशवनी हीर

मूल्य : स्वयं पढे और दूसरों को पढाएं

प्रस्तुति :

श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार सभा

गांव व डाकखाना बिनपालके नजदीक भोगपुर

जिला : जालन्धर [144201] पंजाब

सतगुरु रविदास जी और मूर्ति पूजा

प्राचीन काल से ही मनुवादी लेखकों ने सतगुरु रविदास जी के इतिहास को तोड-मरोड कर लिखा है तथा वह अपनी इस हीन-भावना को अग्रसर करने में एक सीमा तक सफल भी हुए हैं ! किसी ने, सतगुरु को मूर्तिपूजक किसी ने विष्णु के उपासक, गंगा के पुजारी राम के भक्त, ठाकुर की पूजा करने वाले, कृष्ण भक्त और किसी ने रामानन्द के शिष्य सिद्ध किया है। आज वर्तमान समय के भी कुछ ब्राह्मणवादी लेखकों ने वही पौराणिक साम्प्रदायिक रचनाओं का आश्रय लेकर सत-गुरु जी को देवी-देवताओं का पुजारी प्रमाणित किया है।

ब्राह्मणवादी विचारधारा से प्रभावित एवं प्रेरित होकर और गुरु साहिब की वाणी का अध्ययन किए बिना आज हमने भी गुरु जी की प्रतिमाएं बनाने की प्रथा आरम्भ कर दी है तथा उनकी प्रतिमा और मात्र चित्रों की पूजा में लीन हो गए हैं। यद्यपि हम गुरु की वाणी को अपना ईष्ट मानते हैं, परन्तु दूसरी ओर गुरु जी के बताए मार्ग के विपरीत जा रहे हैं। हमने एक ओर तो गुरवाणी का प्रसार किया हुआ है, लेकिन दूसरी ओर मूर्ति पूजा किए जा रहे हैं। क्या हम इस बात से अज्ञात हैं कि गुरवाणी का मूर्ति पूजा से कोई सम्बन्ध नहीं है !

आज हमारा गणमान्य संत समुदाय भी गुरवाणी का आनन्दमय कीर्तन व उपदेश कर मूर्ति स्थापना की प्रथा का विकास करते जा रहे हैं। क्या वे गुरवाणी के इन प्रवचनों से परिचित नहीं ?

अंधे गुंगे अंध अंधार ॥
पाथर ले पूजहि मुगध गंवार ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब पृष्ठ ५५६)

जो पाथर कउ कहते देव ॥ ता की विरथा होवै सेव ॥
जो पाथर की पाई पाइ ॥ तिस की घाल अजाई जाइ।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब पृष्ठ ११६०)

हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब पृष्ठ ६६४)

नहीं, कभी नहीं ! उन्हें इन प्रवचनों का भलि-भांति ज्ञान है, परन्तु हमारे दृष्टिकोण के अनुसार यद्यपि वे मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं तो उनके श्रद्धालुओं एवं सेवकों की संख्या घटने लगती है, जिसे वे किसी हालत में नहीं होने देना चाहते। यही एक प्रमुख कारण है कि इन्हीं स्वार्थी,धार्मिक ठेकेदारों, कट्टरपंथियों और ब्राह्मणवादियों की आपसी सांठ--गांठ से अखिल दलित वर्ग आज अनपढ़ता, छूआ-छूत, मूर्ति पूजा व आडम्बरों का शिकार होता जा रहा है।

आइए,अब हम इस विषय पर चर्चा करें की क्या श्री गुरु रविदास जी मूर्ति पूजक थे अथवा नहीं ? गुरु जी ने कभी भी किसी ठाकुर या मूर्ति की पूजा-अर्चना नहीं की। गुरु जी ने मात्र नाम (शब्द) की कमाई (जो सत-

गुरु जी को परमात्मा से मिला था) के माध्यम से प्रभु को पाया है और हमें भी इसी मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है। प्रत्येक धर्म में प्रभु को पाने का केवल एक ही मार्ग है गुरु के शब्द (नाम) की कमाई। अन्य सभी कर्मकाण्ड निराधार है। गुरु साहिब की धनासरी राग में उच्चारण 'आरती' मूर्ति पूजा का खण्डन ज़ोरदार करती है:-

१ੴ सतिगुरु प्रसादि

धनासरी भगत रविदास जी की।
नामु तेरो आरती मजनु मुरारे।
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा,
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे।
नामु तेरा अम्भुला नाम तेरो चंदनो,
घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥ १ ॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती,
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे।
नामु तेरे की जोति लगाई,
भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥
नामु तेरो धागा नाम फूल माला,
भार अठारह सगल जुठारे ॥
तेरो कीआ तुझहि किया अरपउ,
नामु तेरा तुही चवर ढोलारे॥३॥
दसअठा अठसठे चारे खाणी,

छिअै वरतणि है सगल संसारे।
कहै रविदासु नामु तेरो आरती,
सतिनामु है हरि भोग तुहारे। ४ ॥ ३
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब ६७४)

प्रो.साहिब सिंह इस शब्द की व्याख्या इस प्रकार करते हैं - हे प्रभु ! (अज्ञानी लोग मूर्ति पूजा करते हैं, परन्तु मेरे लिए) तेरा नाम (तेरी) आरती है और तीर्थी का स्नान है। हे भाई (सज्जन) प्रभु के नाम को छोडकर सभी आडम्बर क्रियाकलाप झूठे हैं ।।१।।रहाउ।।

तेरा नाम (मेरे लिए पंडित का) आसन है (जिस पर विराज कर वह मूर्ति पूजा करता है) तेरे नाम ही (चन्दन रगडने के लिए) सिल है, (मूर्ति पूजक सिल पर केसर घोल कर मूर्ति पर केसर का छिडकाव करते हैं) परन्तु मेरे लिए तेरा नाम ही केसर है। प्रभु तेरा नाम ही पानी है, नाम ही चन्दन है। इस नाम रूपी चन्दन को नाम रूपी पानी में मिलाकर, तेरे नाम का समरण रूपी चन्दन ही,मैं तुम पर लगाता हूं।१।

हे प्रभु ! तेरा नाम ही ! दीप है दीए की बाती है। नाम ही तेल है, जो मैंने (नाम रूपी दीए) में डाला है। मैंने तेरे नाम की ही ज्योति जलाई है।(जिसके फलस्वरुप) सभी भवनों, मन्दिरों में प्रकाश हो गया है।२। तेरे नाम से मैंने धागा बनाया है, नामको ही फूल और इन्हीं फूलों की माला बनाई है, अन्य सारी वनस्पति (जिससे फूल लेकर लोग मूर्तियों को भेंट चढाते हैं) तुच्छ है, अयोग्य है। (यह सारी प्राकृति जिसे तुमने

सजित किया है) क्या मैं तुम्हारी ही बनाई प्राकृति के अंशों को तुम्हें अर्पण करूं ? (इसलिए) मैं तेरा नाम ही तुझे अर्पण करता हूं ।३।

समस्त संसार की नितनई यही प्रथा है कि(तेरे नाम को भूलाकर) अठारह वेद-पुराणों की कहानियों के उत्र-पत्र भाव में लीन है और अठारह तीर्थों के स्नान को ही प्रभु भक्ति एवं पुण्य-कर्म समझ बैठे हैं तथा इस प्रकार चार युगों की जून में भटक रहे हैं।

सतगुरु जी के कथन अनुसार हे प्रभु ! तेरा नाम (मेरे लिए) 'आरती' तेरे इस अजल-अनर, आदि नाम का ही मैं तुम्हें भोग लगता हुं ।४।।३

सो इस शब्द में सतिगुरु जी नें हमें मूर्ति पूजा-अर्चना व अन्य कर्मकाण्डों,आडम्बरों से वर्जित किया है, परन्तु वास्तविक्ता यह है कि कई श्रद्धालु, सज्जन इस शब्द को प्रभु की आरती उतारने के लिए उच्चारण किया जाने वाला मन्त्र समझते हैं। और दीपमाला कर इस आरतीका मात्र गायन करते हैं। सो इस शब्द के भाव से यह बात स्पष्ट होती है कि ऐसा करना गुरु साहिब की विचारधारा को उपेक्षा करना होगा।गुजरी राग में भी सतिगुरु जी उपदेश देते हैं हमें प्रभु की पूजा में अपना तन-मन अर्पण करना चाहिए। दूध,फल,जल,हवन तथा धूप-दीप आदि क्रियाकलाप करना झूठे व व्यर्थ हैं प्रभु चरणों में अर्पण करने योग्य नहीं। ....दूध त बछरै थनहु बिटारिओ ।

फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ।१।

धूप दीप नईबेदहि बासा । कैसे पूज करहि तेरी दासा।२।

तनमनु अरपउ पूज चरावउ।गुर प्रसादि निरंजनपावउ।४।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब पृष्ठ ५२५)

अतेव गुरु साहिब की उपरोक्त विचारधारा का भलि-भांति बोध होने पर भी यदि हम मूर्ति पुजा-अर्चना करें तो यह जान-बूझ कर रैदास पंथ व विचारधारा का हनन करना होगा। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि गुरु साहिब जी ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया है तो क्या हमें गुरु जी को मनोकल्पित तस्वीरों को प्रकाशित नहीं करनी चाहिए? उतर है-इन मनोकल्पित तस्वीरों से हमें अपना इतिहास याद करना है। ये तस्वीरें हमारी गुरु साहिब के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति है। अजायब घर में लगी तस्वीरें हमारे लिए इतिहास को याद करने के लिए है न कि पूजा-अर्चना करने के लिए। इसलिए हमें अधिक से अधिक ऐतिहासिक तस्वीरों का प्रकाशन करना चाहिए ,परन्तु हमें स्मरण रखना चाहिए कि ये तस्वीरें हमारा ईष्ट नहीं हैं। गुरु की वास्तविक प्रति मा तो गुरु का नाम (शब्द) है।

गुर मूरत गुर सबद है।

अत: उपरोक्त गुरवाणी के तथ्यों से स्पष्ट है कि गुरु रविदास जी महाराज मूर्ति पूजक नहीं थे। इस लिए हमें भी उनके उपदेश के अनुसार तस्वीरों और मूर्तियों की पूजाअर्चना नहीं करनी चाहिए ताकि हमारी आने वाली भावी पीढ़ी इन झुठे, तुच्छ आडम्बरों के चक्रों से मुक्त रह सके।

श्री गुर रविदास जीं के गुरु कौन थे ?

जब तक किसी समुदाय का इतिहास लिखने की बागडोर

बसी अन्य समुदाय के हाथों में हो तब तक सम्बन्धित समुदाय का वास्तविक इतिहास नहीं लिखा जा सकता। बिल्कुल इसी प्रकार की विशेषता रविदास पंथ में पाई जाती है। वर्तमान समय के कई लेखकों व इतिहासकारों ने श्री गुरु रविदास जी की विचारधारा तथा इतिहास को उलट-पलट कर अनुचित रूप में पेश करने का प्रयास किया है। उन में से किसी ने गुरु साहिब को स्वामी रामानन्द के शिष्य,किसी ने सन्दन स्वामी के शिष्य बताकर उनके व्यक्तित्व को संकुचित बताया है किसी ने उन्हें वेदों-स्मृतियों के उपासक एंव प्रचारक सिद्ध करने का दुस्साहस किया। गुरु साहिब जी को रामानन्द के शिष्य सिद्ध करने के लिए पुरातन लेखक इन साखियों का आश्रय लेते है कि पिछले जन्म में गुरु जी का शिष्य होना, किसी चमार के घर से भिक्षा लाकर अपने गुरु को भोग लगाना और श्राप मिलने से नीच कुल(चमार) में जन्म लेना इत्यादि। परन्तु आधुनिक समय के भी कुछ मनुवादी लेखक गुरु साहिब में संकलित नहीं है, में फेरबदल कर सतगुरु जी को स्वामी रामानन्द के शिष्य सिद्धकरते हैं।

उपरोक्त सभी साखियां अर्थहीन, निराधार, हास्यप्रद्ध तथा खोखली है और गुरु साहिब की समस्त विचार- के प्रतिकूल है। सत्य तो यह है कि गुरु रविदासे जी के गुरु कोई देहधारी मनुष्य नहीं थे और न ही गुरु जी ने किसी देवीदेवता को अपना ईष्ट माना है।गुरु पारब्रह्म थे जो इस समस्त सृष्टि के पालन है तथा सारी सृष्टि

के कण-कण में विद्यमान है। पारब्रह्म को गुरु जी ने अनेक नामों से याद किया है। इस संदर्भ में गुरु जी की ग्रंथ साहिब में अंकित वाणी इसका ठोस प्रमाण है। गुरु जी कथन करते हैं -

1 तुम कहीअत हो जगत गुर सुआमी ... ॥

2 हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि ... ॥

3 सगल भवन के नाइिका,
इकु छिनु दरसु दिखाइजी ... ॥

4 मोहि आधार नामु नाराइिनु ,
जीवन प्रान धन मोरे ... ॥

इन महान प्रवचनों में गुरु साहिब ने पारब्रह्म का स्वामी, हरि,नायक, नारायण इत्यादि नाम से सम्बोधन किया है। चौथी पंक्ति से सिद्ध होता है कि गुरु रविदास जी किसी के शिष्य नहीं थे वे तो मात्र पारब्रह्म की ही उपासना करते थे। अंत में मनुवादी लेखकों द्वारा ऐसी साम्प्रदायिक रचनाओं का मुख्य उदेश्य गुरु साहिब की प्रतिष्ठा को कम करना तथा उनके अनुयायिओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाना है। इस लिए रविदास पंथ के लोगों को ऐसी रचनाओं का संगठित होकर कड़ा विरोध करना चाहिए।

याद रखने योग्य बातें--

1 गुरु रविदास जी के गुरु पारब्रह्म ही थे।

2 गुरु जी ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया है।

3 गुरु रविदास जी को अवतार शब्द से संबोधित करना उचित नहीं।

4 गुरु जी की पत्नी का नाम लूणा व पुत्र का विजय दास था।

5 गुरु जी का जन्म सीर गोवरधनपुर-काशी बनारस में हुआ । इस सभा का संकल्प है कि गुरु रविदास जी के जीवन से संबधित इतिहास व दलित समुदाय के सुधार के लिए अधिक से अधिक साहित्य का प्रकाशन कर घरघर मुफ्त पहुंचाया जाए। इस उदेश्य को पूरा करने के लिए कृपा अपनी मेहनत से कुछ भाग इस सभा को भजकर सहायता करें ।

नोट 1 यदि कोई गुरु प्रेमी गुरु जी के जीवन व वाणी से संबन्धित किसी प्रकार का प्रश्न पूछने का इच्छुक है तो निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें ।

2 आप इस टरैक्ट की प्रतियां 25 पैसे के पोस्ट कार्ड पर अपना पता लिखकर मुफ्त प्राप्त करें। डाक खर्च सभा का होगा ।

3 यदि आप इस टरैक्ट को अपने गांव या नगर में बांटना चाहते हैं तो आप सभा से सौ रुपए प्रति सौ प्रतियां डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं इसके लिए पहले सभा से पत्र व्यवहार करें या वी.पी.पी. द्वारा भेजने के लिए लिखें ।

4 कृपा अपने बहुमूल्य सुझाव हमें भेजें। यह भी लिखें गुरु साहिब के मिशन के किस विष्य पर ऐसे टरैक्ट छपवा कर आप को भेजने चाहिएं ।

सहायता भेजने व जानकारी हेतु सम्पर्क करें

--- राज कुमार 'दडोच'

श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार सभा गांव डाकखाना बिनपालके नजदीक भोगपुर जि. जालन्धर-144201

सिमर प्रिटिंग प्रेस मेन रोड जंडू सिंघा जालन्धर व किसी भी विवाद के लिए प्रेस उतरदाये नहीं स्वयं श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार सभा है ।